# प्रसार शिक्षा निदेशालय
# चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
# फरवरी 2024 महीने के प्रथम पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्य

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने फरवरी, 2024 माह के प्रथम पखवाड़े में किये जाने वाले मौसम पूर्वानुमान सम्बन्धित कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है, जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।

## गेहूँ

- गेहूँ की बुआई के 30 से 35 दिन बाद जहां संकरी एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतबार में 2-3 पत्तियां आ गई हों उसके नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी वेस्टा (मेटसल्फयूरॉन मिथाईल 20 डब्ल्यू पी. + क्लोडिनाफॉप प्रोपार्जिल 15 डब्ल्यू पी.) 16 ग्राम प्रति 30 लीटर पानी में घोलकर एक कनाल में छिड़काव करें।
- जहां फसल में सिर्फ चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार हों, उसके नियंत्रण के लिए 2,4-डी की 50 ग्राम मात्रा अथवा मेटसल्फयूरॉन मिथाईल (20 डब्ल्यू. पी.) की 80 मिली प्रति 30 लीटर पानी में घोलकर एक कनाल में छिड़काव करें। गेहूँ के साथ चौड़ी पत्ती वाली फसल की खेती की गयी हो तो 2,4-डी या मेटसल्फयूरॉन मिथाईल का प्रयोग न करें।
- छिड़काव से दो-तीन दिन पहले हल्की सिंचाई करें। छिड़काव के बाद एक सप्ताह सिंचाई न करें। छिड़काव के लिए फ्लैट फैन नोजल इस्तेमाल करें। पम्प को छिड़काव से पहले व बाद में अच्छी तरह धो लें।

## गोभी सरसों

- गोभी सरसों में फूल आने से पहले यूरिया 125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से डालें। पौधें की संख्या अगर खेत में अधिक हो तो यूरिया प्रयोग से पहले फालतू पौधे को निकालें।

## सब्ज़ी उत्पादन

- मूली की सुधरी किस्म पूसा हिमानी की बीजाई समतल खेतों में या मेढ़ें बनाकर 20-25 सैं.मी. की दूरी पर करें। खेतों में बीज की सही मात्रा डालने के लिए बीजाई से पहले बीज में बराबर मात्रा में सूखी रेत मिलाएं।
- फूलगोभी, बन्दगोभी, प्याज व लहसुन इत्यादि में निराई-गुड़ाई करें तथा निराई गुड़ाई करते समय यूरिया 50 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर खेतों में डालें। आलू में मिट्टी चढ़ाते समय यूरिया 125 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। इस समय लहसुन एवं प्याज की निराई गुड़ाई के बाद सिंचाई करें।

## फसल संरक्षण

- प्याज में डाउनी मिल्डयू व परपल ब्लोच तथा लहसुन में स्टेमफाईलम बीमारी के नियंत्रण के लिए मैंकोजेब या रिडोमिल एम.जैड 2.5 ग्राम/ली. पानी मे घोल कर छिड़काव करें।
- गेहूँ की फसल में पीला रतुआ रोग के प्रबंधन के लिए टिल्ट (प्रापिकोनाजोल 25 ई.सी.) या फॉलीक्योर टैवुकोनाजोल 25 ईसी. या बेलाटान 25 डब्ल्यू.पी. का 0.1 प्रतिशत घोल यानि 30 मि.ली. रसायन 30 लीटर पानी में घोलकर प्रति कनाल की दर से छिड़काव करें व 15 दिन के अन्तराल पर इसे फिर से दोहराएं।
- तिलहनी फसलों में तेला / एफिड़ के नियंत्रण के लिए डाईमिथोएट (30 ई.सी.) या ऑक्सीडेमेटोन मिथाईल (25 ई.सी.) दवा की 1 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। प्रभावी नियंत्रण के लिए एक कनाल में 30 लीटर घोल का छिड़काव अवश्य करें। छिड़काव सुबह 9.00 बजे से पहले करें, ताकि मित्र कीटों जैसे मधुमक्खी को क्षति न हो। साग वाली फसलों में कीटनाशक का छिड़काव न करें।
- आलू की फसल को सफेद सुंडी, कटुआ कीट के आक्रमण से बचाने के लिए बिजाई से पहले क्लोरपाइरिफॉस (20ई.सी.) 80 मिली प्रति किलोग्राम रेत में मिलाकर एक कनाल की दर से खेत में मिलाएं।
- चने में फली-छेदक सुंडी के आक्रमण के प्रति सावधान रहें तथा इसका अधिक प्रकोप होने की स्थिति में वैज्ञानिकों या कृषि अधिकारियों से सम्पर्क करें।

## पशुधन प्रबंधन

- फ़रवरी महीने में मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों में कड़ाके की ठंड का दौर जारी रहेगा। पहाड़ी क्षेत्रों में शून्य से करीब तापमान और मैदानी इलाकों में ठंड, कोहरे तथा धुंध के कारण पशुओं की उत्पादन और प्रजनन क्षमता प्रभावित होती है तथा कई प्रकार की बीमारिया लग सकती हैं। बारिश और बर्फबारी के बाद पशुओं को ठंड से बचाने के सभी कार्य सुनिश्चित करें, जैसे की अत्यधिक खराब मौसम में कृत्रिम रोशनी का प्रबंध, पशुओं को मोटे कपड़े या बोरों से ढंकना, गुनगुना पानी पीने के लिए देना, पशुओं के शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए उन्हें खली और गुड़ का मिश्रण खिलाना, गौशाला के फर्श पर सूखे पते या घास को विछाना आदि शामिल हैं। सर्दियों में पशुओं के स्वास्थ्य की निगरानी रखें और किसी भी बीमारी के प्रारम्भिक लक्षण दिखते ही तुरंत पशु चिकित्सक की सलाह प्राप्त करें। भेड-बकरी में घातक संक्रामक रोग जेसे एंटरोटॉक्सिमिया और पॉक्स इस समय किन्नौर जिले में संभाबित हो सकता हैं। प्रभावित जानवरों में पेट दर्द के लक्षण जैसे कि पेट पर लात मारना, बार-बार लेटना और उठना तथा दस्त लगना, एंटरोटॉक्सिमिया के लक्षण हो सकते है। एंटरोटॉक्सिमिया और अन्य संक्रामक रोगों से बचाब के लिए उनका टीकाकरण पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार अवश्य करवाएं। डेयरी पशुओं में थनेला रोग की रोकथाम के लिए, उन्हें पूरी तरह से दुहना चाहिए तथा सभी पशुओं, बिशेषकर नवजात पशुओं को कृमि मुक्त रखने के लिए उन्हे पशु चकित्सक की सलाह से परजीवीरोधी दवाई खिलाएं।
- फरवरी माह में मछली पालक अपने तालाब की तैयारी नये मछली बीज ड़ालने के लिए शुरू करें। जब धूप हो तो 25 से 30 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से चूने का छिड़काव तालाब में करें। चूने के छिड़काव के एक दो दिन बाद 2 किलोग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से जैविक खाद ( गोबर खाद, मूर्गी खाद या अन्य जैविक कचरा ) का प्रयोग करें। पहली बार में जैविक खाद का प्रयोग 1 किलोग्राम प्रति वर्गमीटर की दर से करें तथा उसके 7 से 15 दिनों बाद शेष बचे खाद का प्रयोग कई किस्तों में करें। खाद के प्रयोग के बाद तालाव को पानी से भरकर 15 से 20 दिनों के लिए छोड़ दें। इसके अलावा किसान इस समय अपने पुराने तालाव की सफाई भी करें।

**किसान भाईयों एवं पशु पालकों से अनुरोध् है कि अपने क्षेत्रा की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ठ जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र व कृषि अधिकारियों से सम्पर्क बनाए रखें। अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र एटिक 01894-230395/1800-180-1551 से भी सम्पर्क कर सकते हैं।**

निदेशक
प्रसार शिक्षा

**प्रसार शिक्षा निदेशलय, चैधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,पालमपुर द्वारा किसानों के हित में जारी।**

प्रतिलिपि

1. सयुंक्त निदेशक ; सूचना व जनसम्पर्क, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
2. मुख्य सम्पादक, गिरीराज प्रैस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला; हिमाचल प्रदेश
3. प्रभारी, यू.एन.एस., चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, बेवसाइट अपलोड हेतू प्रेषित।
4. केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, धर्मशाला तथा शिमला, हिमाचल प्रदेश।
5. केन्द्र निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
6. प्रधान ग्राम पंचायत, धरेड, (बैजनाथ) को उचित कार्यवाही हेतू प्रेषित।

Endst No. QSD 3-57/DEE/Tech/CSKHPKV/-8618-23 Dated: 1/02/2024